

पद चालीस का गुप्त इतिहास — संख्या इक्कीस

दूसरा हाथ — भाग आठ — यहजेकेल संख्या दो

Jeff Pippenger

2026-08-05

यहजेकेल उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके लिए यहूदा के गोत्र के सिंह द्वारा शिक्षा का कार्य संपन्न किया गया है, और उसकी मूल शिक्षा “पंक्ति पर पंक्ति” है।

जिससे उसने कहा, यही वह विश्राम है जिससे तुम थके-मांदों को विश्राम दे सकते हो; और यही वह ताज़गी है; तौभी उन्होंने सुनना न चाहा। परन्तु यहोवा का वचन उनके लिये आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा ठहरा; ताकि वे चलें, और पीछे की ओर गिरें, और टूट जाएँ, और फँसें, और पकड़े जाएँ। यशायाह 28:12, 13.

वर्तमान समय में यहूदा के गोत्र का सिंह यहजेकेल की पुस्तक को खोल रहा है। हमें बताया गया है कि यहजेकेल तीसवें वर्ष में एक याजक है, चाहे “तीस” उसके याजकत्व की प्रतीकात्मक आयु को दर्शाता हो, अथवा उस भविष्यद्वाणीमय क्रम के तीसवें वर्ष को जो योशियाह की महान जुबिली से आरम्भ हुआ था। उत्तरकाल के अंतिम याजकत्व का समूह एक लाख चवालीस हजार है, और प्राचीन शाब्दिक इतिहास उत्तरकाल में एक प्रतीकात्मक इतिहास का पूर्वरूप ठहरते हैं।

परन्तु तुम यहोवा के याजक कहलाओगे; लोग तुम्हें हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे; तुम अन्यजातियों की सम्पत्ति को खाओगे, और उनकी महिमा में तुम अपने आप पर घमण्ड करोगे। यशायाह 61:6.

यहजेकेल अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा का एक प्रतीक है—वह पवित्र इतिहास, जिसकी पहचान प्रत्येक भविष्यवाणी-संबंधी गवाही करती है। वह पवित्र इतिहास तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन है, जिसका विशेष रूप से 1840 में प्रथम स्वर्गदूत के आंदोलन द्वारा प्रतीकीकरण किया गया था। प्रथम स्वर्गदूत का आंदोलन तीन स्वर्गदूतों में अल्फा स्वर्गदूत था और तीसरा ओमेगा स्वर्गदूत है। इसलिए यहजेकेल एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय में पतरस के साथ संरेखित है। जिस प्रतीकात्मक इतिहास में पतरस और यहजेकेल दोनों स्थित हैं, उसे पनिम का इतिहास निरूपित किया गया है।

छोटी पुस्तक

यहजेकेल छोटी पुस्तक को ग्रहण करता है, जैसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य दस में किया।

परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ उसे सुन; उस विद्रोही घराने के समान तू भी विद्रोही न हो: अपना मुँह खोल, और जो मैं तुझे देता हूँ उसे खा। और जब मैंने देखा, तो देखो, एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया गया; और देखो, उसमें एक पुस्तक का पत्र था; और उसने उसे मेरे सामने फैलाया; और वह भीतर और बाहर लिखा हुआ था; और उसमें विलाप, शोक, और हाथ लिखा था। फिर उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिले उसे खा; इस पत्र को खा, और जा, इस्राएल के घराने से बातें कर। तब मैंने अपना मुँह खोला, और उसने मुझे वह पत्र खिलाया। और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपना पेट भर, और अपनी अंतड़ियों को इस पत्र से परिपूर्ण कर, जो मैं तुझे देता हूँ। तब मैंने उसे खा लिया; और वह मेरे मुँह में मधु के समान मीठा था। यहजेकेल 2:8-10, 3:1-3।

प्रकाशितवाक्य दस में, यूहन्ना उस छोटी पुस्तक को खाता है, और संपूर्ण अध्याय 11 अगस्त, 1840 से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रगटीकरण का प्रतिनिधित्व करता है।

“जो स्वर्गदूत तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश की घोषणा में सहभागी होकर उससे एक हो जाता है, वह अपनी महिमा से सारी पृथ्वी को आलोकित करने वाला है। यहाँ एक ऐसे कार्य की भविष्यवाणी की गई है जो विश्वव्यापी विस्तार और असाधारण सामर्थ्य का होगा। 1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की सामर्थ्य का एक महिमामय प्रकटीकरण था; पहले स्वर्गदूत का सन्देश संसार के प्रत्येक मिशनरी केन्द्र तक पहुँचाया गया, और कुछ देशों में ऐसा महानतम धार्मिक जागरण देखा गया, जैसा सोलहवीं शताब्दी के धर्म-सुधार के बाद से किसी भी देश में नहीं देखा गया था; परन्तु तीसरे स्वर्गदूत की अन्तिम चेतावनी के अधीन होने वाला प्रबल आंदोलन इन सब से भी बढ़कर होगा।” The Great Controversy, 611.

यहेजकेल प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में यूहन्ना के साथ समन्वित है; अतः एक लाख चवालीस हज़ार के मुहरबंद किए जाने के समय पतरस, यूहन्ना और यहेजकेल अपने-अपने नियत स्थान में एक साथ खड़े होते हैं।

1840 से 1844 तक एक चार-वर्षीय अवधि को निरूपित करता है, जो उस समय-भविष्यवाणी के आरम्भ के साथ प्रारम्भ हुई थी, जो 27 जुलाई, 1299 को एक सौ पचास वर्षों की अवधि से शुरू हुई थी। वे “पाँच महीने” समाप्त हुए और तीन सौ इक्क्यानवे वर्ष और पंद्रह दिन की उस समय-भविष्यवाणी के साथ जुड़ गए, जो 11 अगस्त, 1840 को समाप्त हुई, जब परमेश्वर की सामर्थ्य का महिमामय प्रकट होना 22 अक्टूबर, 1844 तक प्रकट होता रहा। तब भविष्यसूचक समय का प्रयोग समाप्त हो गया।

और उसकी शपथ खाई जो युगानुयुग जीवित रहता है, जिसने स्वर्ग और उसकी सब वस्तुओं को, और पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को, और समुद्र और उसकी सब वस्तुओं को सृजा है, कि फिर समय न रहेगा।
प्रकाशितवाक्य 10:6.

22 अक्टूबर 1844 को भविष्यवाणी का वैध अनुप्रयोग होने के रूप में भविष्यसूचक समय समाप्त हो गया। यहेजकेल, पतरस और यूहन्ना, प्रत्येक, प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के आंदोलन की तथा तृतीय स्वर्गदूत के आंदोलन की भी परमेश्वर की बुद्धिमान कुँवारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दर्शन

यहेजकेल के प्रथम ‘ग्यारह’ अध्याय, जैसा कि अध्याय एक के पद एक में प्रस्तुत किया गया है, “दर्शनों” की एक शृंखला प्रस्तुत करते हैं।

तीसवें वर्ष में, चौथे महीने के पाँचवें दिन ऐसा हुआ कि जब मैं कस्दियों के बीच केबार नदी के किनारे था, तब आकाश खुल गया, और मैंने परमेश्वर के दर्शन देखे। यहेजकेल 1:1।

पहले ग्यारह अध्यायों के “दर्शनों” का प्रथम प्रादुर्भाव अध्याय एक में केबार नदी के तट पर हुआ, फिर अध्याय तीन के “मैदान” वाले दर्शन में उसका विस्तार किया गया, और उसके बाद अध्याय आठ के यरूशलेम वाले दर्शन में फिर से उसे प्रकट किया गया। केबार नदी, मैदान, और यरूशलेम—ये तीन स्थान तीन दर्शनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मिलकर एक ही दर्शन बनाते हैं; यही पद एक और पहले ‘ग्यारह’ अध्यायों के “दर्शन” हैं।

जुबिली

तीसवें वर्ष को उस जुबली चक्र के तीसवें वर्ष के रूप में मानना, जो योशियाह के प्रसिद्ध फसह से आरम्भ हुआ था और फिर 22 अक्टूबर को समाप्त हुआ, सरलता से समर्थित किया जा सकता है, क्योंकि पवित्र इतिहास की वह विशेष रेखा स्पष्ट रूप से, पंक्ति पर पंक्ति, एक से अधिक साक्षियों द्वारा चित्रित की गई है। उदाहरणार्थ; फसह वसंतकालीन पर्वों का प्रतिनिधित्व करता है और प्रायश्चित्त का दिन शरदकालीन पर्वों का प्रतिनिधित्व करता है। अतः लैव्यव्यवस्था तेइस उस जुबली चक्र के साथ संरेखित है जो योशियाह के साथ आरम्भ हुआ था। अन्य रेखाएँ भी हैं जो राजा योशियाह द्वारा निरूपित इतिहास से लेकर 22 अक्टूबर, 573 ईसा-पूर्व तक संरेखित होती हैं। 22 अक्टूबर, 573 ईसा-पूर्व को जुबली वर्ष की ऐतिहासिक पूर्ति इतिहासकारों द्वारा समर्थित है।

कालक्रमवेत्ता सामान्यतः प्रायश्चित्त के दिन को 22 अक्टूबर, 573 ईसा पूर्व पर स्थापित करने में सहज हैं, और 622 ईसा पूर्व में योशियाह का महान फसह भी उन बाइबिलीय कालक्रमवेत्ताओं द्वारा स्वीकृत तिथि है। फसह, जो वसंतकालीन पर्वों का एक प्रतीक है, उनचास-वर्षीय जुबिली-चक्र का आरंभ करता था, जो प्रायश्चित्त के दिन शरद्कालीन पर्वों के प्रतीक पर समाप्त होता था। वर्षों के वे सात सप्ताह, जो मिलकर उनचास वर्ष बनाते थे, भूमि के सत्त के प्रतीक थे।

“इतिहास, या उपदेश, या भविष्यवाणी—प्रत्येक पृष्ठ में पुराने नियम के पवित्रशास्त्र परमेश्वर के पुत्र की महिमा से आलोकित हैं। जहाँ तक वह दैवीय व्यवस्था का था, यहूदियत की संपूर्ण व्यवस्था सुसमाचार की एक सघन भविष्यवाणी थी। मसीह के विषय में “सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं।” प्रेरितों के काम 10:43। आदम को दी गई प्रतिज्ञा से लेकर कुलपतियों की वंश-रेखा और व्यवस्था की समस्त प्रथा तक, स्वर्ग के तेजोमय प्रकाश ने उद्धारकर्ता के पदचिह्नों को स्पष्ट कर दिया। द्रष्टाओं ने रहस्यमय जुलूस के समान अपने सामने से भविष्य की बातें गुजरते हुए बेथलेहेम के तारे और आने वाले शीलोह को देखा। प्रत्येक बलिदान में मसीह की मृत्यु प्रकट की गई। धूप के प्रत्येक बादल में उसकी धार्मिकता ऊपर उठती थी। प्रत्येक जुबली के तुरही-नाद द्वारा उसके नाम का प्रचार किया जाता था। परमपवित्र स्थान के भयावह रहस्य में उसकी महिमा वास करती थी।” द डिज़ायर ऑफ एजेज, 211।

सत्रह

573 ईसा-पूर्व से चौदह वर्ष पहले, जब यरूशलेम पतित हुआ, तब सिदकियाह को बाबुल ले जाया गया था। यहूदी इतिहासकार 622 में योशियाह के समय से लेकर 22 अक्टूबर, 573 तक के जुबली चक्र को 17वाँ जुबली चक्र ठहराते हैं। राफिया के युद्ध से पानियम के युद्ध तक की अवधि सत्रह वर्ष थी। राफिया के युद्ध में विजेता टॉलेमी था, और उसने दक्षिण के राजा के रूप में सत्रह वर्ष तक राज्य किया। मिलान के फ़रमान से लेकर 330 में कॉन्स्टेन्टाइन द्वारा अपने साम्राज्य का विभाजन किए जाने तक सत्रह वर्ष थे। सत्रहवें जुबली चक्र में यरूशलेम नबूकदनेस्सर द्वारा नष्ट किया गया।

क्योंकि इस्राएल की सन्तानें बहुत दिनों तक बिना राजा, और बिना प्रधान, और बिना बलिदान, और बिना मूर्ति, और बिना एपोद, और बिना तेरापीम के बनी रहेंगी; इसके बाद इस्राएल की सन्तानें लौटेंगी, और यहोवा अपने परमेश्वर को, और दाऊद अपने राजा को खोजेंगी; और अन्त के दिनों में वे यहोवा और उसकी भलाई का भय मानेंगी। होशे 3:4, 5.

होशे एक ऐसे विषय को संबोधित कर रहे हैं जिसका सीधा संबंध सिदकियाह की बन्धुआई से है, यद्यपि वह 723 ईसा-पूर्व में उत्तरी राज्य की बन्धुआई के आरम्भ का भी प्रतिनिधित्व करता है। होशे के इस अंश का यहेजकेल की गवाही से संबंध इस कारण है कि जब इस्राएल ने एक मानवीय राजा पर आग्रह किया, तब उसने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया। इस्राएल की यह अभिलाषा कि उस पर एक दैवी राजा के स्थान पर एक मानवीय राजा राज्य करे, लैव्यव्यवस्था 26 में “सात काल” के न्याय के अंतर्गत “तुम्हारी शक्ति का घमण्ड” के रूप में निरूपित की गई है।

और यदि तुम इन सब के बाद भी मेरी न सुनोगे, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सात गुना अधिक दण्ड दूँगा। और मैं तुम्हारी शक्ति के घमण्ड को तोड़ दूँगा; और तुम्हारे आकाश को लोहे के समान, और तुम्हारी पृथ्वी को पीतल के समान कर दूँगा। लैव्यव्यवस्था 26:18, 19.

“तुम्हारी सामर्थ्य का अभिमान” इस्राएल की उस अभिलाषा का प्रतिनिधित्व करता है कि वह संसार के समान हो जाए और उसका अपना राजा हो। 723 ईसा-पूर्व में उत्तरी राज्य से राजा का हटाया जाना, और फिर 586 ईसा-पूर्व में दक्षिणी राज्य के राजा सिदकियाह का बन्दी बना लिया जाना, प्राचीन इस्राएल के “अभिमान” के टूटने का प्रतिनिधित्व करता है, और अभिमान पतन से पहले होता है। बाइबिलीय भविष्यवाणी में “सामर्थ्य” एक राजा या राज्य होता है, और एक मानवीय राजा प्राप्त करने में इस्राएल का अभिमान ईश्वर-तंत्र तथा दिव्य राजा के अस्वीकार को चिह्नित करता है।

और ऐसा हुआ कि जब शमूएल वृद्ध हो गया, तब उसने अपने पुत्रों को इस्राएल पर न्यायी ठहराया। उसके पहिलौठे का नाम योएल था; और उसके दूसरे का नाम अबिव्याह था; वे बेएर-शेबा में न्यायी थे। परन्तु उसके पुत्र उसके मार्गों पर न चले, वरन् लाभ के पीछे मुड़ गए, और घूस ली, और न्याय को बिगाड़ा। तब इस्राएल के सब पुरनिये इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास आए, और उससे कहा, देख, तू वृद्ध हो गया है, और तेरे पुत्र तेरे मार्गों पर नहीं चलते; अब हमारे लिये एक राजा ठहरा दे जो सब जातियों के समान हमारा न्याय करे। परन्तु यह बात शमूएल को बुरी लगी, जब उन्होंने कहा, हमारा न्याय करने के लिये हमें एक राजा दे। तब शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। और यहोवा ने शमूएल से कहा, जो कुछ वे तुझ से कहते हैं उसमें लोगों की बात मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझे नहीं, परन्तु मुझे त्याग दिया है, कि मैं उन पर राज्य न करूँ। जैसे-जैसे वे उस दिन से, जिस दिन मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और पराए देवताओं की सेवा की, वैसे ही वे तेरे साथ भी करते हैं। सो अब उनकी बात मान; तौभी तू उन्हें गम्भीरता से चेतावनी दे, और उन्हें उस राजा की रीति बता दे जो उन पर राज्य करेगा। 1 शमूएल 8:1-9।

यह ध्यान देने योग्य है कि उस समय इस्राएल ने न केवल परमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार किया, वरन् भविष्यद्वाणी की आत्मा को भी, जो शमूएल द्वारा प्रतिनिधित्वित थी; क्योंकि यह कहा गया है, “उन्होंने मुझे त्याग दिया है, और अन्य देवताओं की सेवा की है; वे तेरे साथ भी वैसा ही करते हैं।”

“शैतान... निरंतर जाली बातों को आगे बढ़ा रहा है—ताकि सत्य से भटका दे। शैतान का सबसे अंतिम छल यह होगा कि वह परमेश्वर के आत्मा की गवाही को निष्प्रभावी कर दे। ‘जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नाश हो जाते हैं’ (नीतिवचन 29:18)। शैतान चतुराई से, भिन्न-भिन्न उपायों द्वारा और विभिन्न माध्यमों से, परमेश्वर के शेष लोगों के सच्ची गवाही पर विश्वास को डगमगाने का कार्य करेगा।”

“साक्ष्यों के विरुद्ध ऐसी घृणा भड़काई जाएगी जो शैतानी होगी। शैतान की कार्यवाहियाँ यह होंगी कि कलीसियाओं के उनमें विश्वास को डगमगा दे, और इसका कारण यह है: यदि परमेश्वर की आत्मा की चेतावनियों, ताड़नाओं और परामर्शों पर ध्यान दिया जाए, तो शैतान के लिए अपनी छलनाओं को लाने और प्राणों को अपने भ्रमों में बाँध रखने का मार्ग इतना स्पष्ट नहीं रह सकता।” Selected Messages, book 1, 48.

प्राचीन इस्राएल के ईशशासन के लिए अंतिम छल केवल परमेश्वर का ही नहीं, वरन् भविष्यद्वाणी की आत्मा का भी अस्वीकार था। 1097 ईसा-पूर्व में हुआ वह अस्वीकार 1863 में लौदीकिया-संबंधी सेवेंथ-डे एडवेंटिज़्म के अंतिम छल का प्रतीकात्मक रूप है। लैव्यव्यवस्था 26 के “सात काल” परमेश्वर का वचन हैं, और भविष्यद्वाणी की आत्मा “सात काल” के विषय में यह कहती है कि उन्हें “परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए।”

“मैंने देखा है कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था, और उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए; कि संख्याएँ वैसी ही थीं जैसी वह उन्हें चाहता था; कि उसका हाथ उन संख्याओं में से कुछ में हुई एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।” Early Writings, 74.

भविष्यद्वाणी की आत्मा ने स्पष्ट रूप से “सात काल” का समर्थन किया, और उसका यह समर्थन इस बात की चेतावनी था कि चार्ट के अंकों में कोई परिवर्तन न किया जाए, जिसमें “सात काल” मध्य स्तंभ तथा ऊपर दाएँ कोने में स्थित है। 1863 में उरियाह स्मिथ के जाली चार्ट के साथ, आधारभूत सत्यों का क्रमिक अस्वीकार—जिसका प्रतिरूप प्राचीन इस्राएल द्वारा परमेश्वर के अस्वीकार में देखा जाता है—आरंभ हुआ, और भविष्यद्वाणी की आत्मा ने 1863 के विद्रोह की पहचान की। 1863 के विद्रोह की तिथि यहजेकल की पुस्तक में प्रस्तुत भविष्यसूचक रेखा के साथ मेल खाती है। उस ऐतिहासिक रेखा में निष्कर्ष यरूशलेम का विनाश था, जो रविवार व्यवस्था का प्रतिरूप था। 1863 से शीघ्र आने वाली रविवार व्यवस्था तक की अवधि, 1097 ईसा पूर्व में राजा शाऊल के इतिहास से लेकर 586 ईसा पूर्व में सिदकियाह तक के इतिहास द्वारा प्रतिरूपित की गई थी।

573 ईसा पूर्व के जुबली से चौदह वर्ष पहले सिदकिय्याह को बाबुल में बन्धुआई में ले जाया गया। सत्रहवाँ जुबली-चक्र 622 ईसा पूर्व में आरम्भ हुआ, और तैंतीसवें नहीं, वरन् तीसवें वर्ष में यहजेकेल 591 ईसा पूर्व में एक याजक के रूप में प्रस्तुत किया गया; फिर पाँच वर्ष बाद 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम नष्ट कर दिया गया। वह उसी वर्ष के उसी दिन नष्ट किया गया जिस दिन बाद में ईस्वी 70 में तीतुस द्वारा दूसरी बार नष्ट किया गया था। यहजेकेल एक के पद एक में वर्णित समय यरूशलेम के विनाश से पाँच वर्ष पहले और चालीसवें अध्याय के मन्दिर-दर्शन से उन्नीस वर्ष पहले का है।

हमारी बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष के आरम्भ में, महीने के दसवें दिन, उस नगर के मार डाले जाने के चौदहवें वर्ष में, ठीक उसी दिन यहोवा का हाथ मुझ पर ठहरा, और वह मुझे वहाँ ले गया। यहजेकेल 40:1.

भूमि के सब्त की वाचा के प्रति अवज्ञा के कारण, परमेश्वर ने यह ठहराया कि भूमि के सब्त, अर्थात् सातवें वर्ष, के प्रति अवज्ञा का शाप “सात काल” होगा। “काल” एक वर्ष है, और एक “वर्ष” तीन सौ साठ दिनों का होता है, और सात गुना तीन सौ साठ, पच्चीस सौ बीस वर्ष होते हैं। संभव है कि मिलराइट्स ने “द ट्वेंटी-फ़ाइव ट्वेंटी” जैसी अभिव्यक्ति का प्रयोग न किया हो, परन्तु उनके दोनों पवित्र चार्टों ने संख्यात्मक रूप से उन पच्चीस सौ बीस वर्षों की पहचान की थी।

इस्राएल के उत्तरी राज्य और यहूदा के दक्षिणी राज्य—दोनों—पर सात गुने शाप की घोषणा, विलियम मिलर की पहली समझ थी; या आप कह सकते हैं, ‘आधारभूत’ समझ; या आप यह भी कह सकते हैं कि वह उनकी “अल्फ़ा” समझ थी। 1863 में लौदीकियाई सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया ने मिलर की खोजों की उस आधारभूत समझ को अस्वीकार कर दिया; वे “खोजें” जो मिलेराइट आंदोलन की संपूर्ण नींव का प्रतिनिधित्व करती थीं। प्रेरणा ने सीधे चेतावनी दी थी कि ऐसा हो सकता है, और ऐसा हुआ है, और यह बहुत पहले हो चुका था।

बाबुल की बन्धुआई के बाद जो मन्दिर फिर से बनाया गया, उसकी नींव पहले आदेश के इतिहास के दौरान, और दूसरे आदेश से पहले, पूरी की गई थी। मन्दिर का पूर्ण निर्माण दूसरे आदेश के इतिहास में हुआ। तीसरे आदेश में शाब्दिक प्राचीन इस्राएल को राष्ट्रीय प्रभुसत्ता पुनः प्रदान की गई। विलियम मिलर उस पहले स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करते थे जो 1798 में आया और 11 अगस्त, 1840 को सामर्थ्य दिया गया। दूसरा स्वर्गदूत नींव डाले जाने के बाद आया, जैसा कि 1843 के चार्ट द्वारा दर्शाया गया है, जो मई 1842 में प्रकाशित हुआ था। 1844 की पहली निराशा में, 1844 की अल्फ़ा निराशा में, दूसरा स्वर्गदूत और साथ ही कुँवारियों के दृष्टान्त में विलम्ब का समय भी आया, और जब दूसरे स्वर्गदूत के सन्देश को एक्सेटर शिविर-सभा में सामर्थ्य दिया गया, तब मन्दिर पूरा हो गया। फिर 1844 की महान, अथवा ओमेगा निराशा में, वाचा का दूत अचानक अपने मन्दिर में आया, उन तेईस सौ वर्षों की पूर्ति में, जो तीसरे आदेश से आरम्भ हुए और तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर समाप्त हुए।

यशिय्याह का अर्थ है “परमेश्वर की नींव।” चाहे वह राजा यशिय्याह हो या यशिय्याह लिच; दोनों ही नींवों के प्रतीक हैं, जैसा कि प्रथम फ़रमान के इतिहास में निरूपित है और जैसा कि लैव्यव्यवस्था तेईस की पहली बाईस आयतों में प्रस्तुत वसन्तकालीन पर्वों द्वारा निरूपित है। नींवें, वसन्तकालीन पर्व, और प्रथम फ़रमान—ये सभी 1840 तथा प्रथम स्वर्गदूत के सामर्थ्य-प्रदान के प्रतीक हैं। 22 अक्टूबर, 573 ईसा-पूर्व, जैसा कि यहजेकेल अध्याय 40 और पद 1 में प्रस्तुत किया गया है, 22 अक्टूबर, 1844 तथा मरे हुआओं के न्याय के उद्घाटन का एक प्रतीक है, और साथ ही 11 सितम्बर, 2001 तथा जीवितों के न्याय के उद्घाटन का भी एक प्रतीक है। जो कोई इन लेखों का अनुसरण करता आया है, उसे उन अनुप्रयोगों को जानना चाहिए जिनका मैं प्रयोग कर रहा हूँ।

यहजेकेल अपनी लेखनियों में निरूपित भविष्यवाणी संबंधी इतिहास के भीतर एक प्रतीक है। अध्याय आठ के अंत में जब पच्चीस पुरुष सूर्य को दण्डवत् करते हैं, तब यहजेकेल वहाँ उपस्थित है। वह अगले अध्यायों में भी वहाँ उपस्थित था, जब ‘मुहर लगाने की क्रिया जिसके पश्चात् वध होता है’ यरूशलेम पर लाई जाती है, जिसे एलेन व्हाइट सातवें-दिन एडवेंटिस्ट कलीसिया के रूप में पहचानती हैं। पहले ग्यारह अध्यायों में, यहजेकेल को अपनी आज्ञाएँ प्राप्त करने के लिए स्वर्गीय पवित्रस्थान में लाया जाता है, जैसा 1844 में मिलेरियों को करने के लिए बुलाया गया था, और

जैसा अब इस आंदोलन को करने के लिए बुलाया जा रहा है।

इस प्रकार यहजेकेल तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा; जो कुछ उसने किया है, उसी के अनुसार तुम भी करोगे; और जब यह घटित होगा, तब तुम जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। यहजेकेल 24:24.

जब यह घटित होगा

जब हम अंतिम दिनों में उस बिंदु तक पहुँचते हैं जहाँ वे बातें जो यहजेकेल ने चित्रित की थीं, परमेश्वर की प्रजा में पुनः घटित हो रही हों, तब हम यहजेकेल के चिन्ह तक पहुँच गए होते हैं। जब तुम जानते हो कि यहजेकेल एक लाख चौवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करता है, और तुम इसे विश्वास और समझ के उस स्तर तक जानते हो जिसमें यह पवित्रीकृत प्रत्याशा विद्यमान हो कि यहजेकेल ने अपने लेखनों में जो कुछ चित्रित किया है वह अंतिम दिनों में एक लाख चौवालीस हजार से संबंधित घटनाओं के एक पवित्र क्रम का प्रतिरूप है—जब तुम यह जानते हो, तब “तुम जान लोगे” कि “यहोवा” ही “परमेश्वर” है।

हम इन विचारों को अगले लेख में आगे जारी रखेंगे।